
Under CSR Support by
ipca | Foundation
missiongyan
ARJUN BATCH
CLASS 11th | GEOGRAPHY
अपवाह तंत्र
अध्याय-3 | भाग-3
एकदम BASIC से!
mg

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

आज क्या पढ़ेंगे ?



1. हिमालयी अपवाह तंत्र
2. प्रायद्वीपीय अपवाह तंत्र

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

अपवाह → निश्चित वाहिकाओं के द्वारा जल का प्रवाह अपवाह कहलाता है।

अपवाह तंत्र → अपवाह (नदियाँ) के जाल को अपवाह तंत्र कहते हैं।

नदी द्रोणी

- प्रमुख | वृहद
  - 20000 $K.m^2$ + अपवाह
- मध्यम
  - 2000 to 20000 Km^3
- लघु
  - 2000 $K.m^2$ (कम)

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

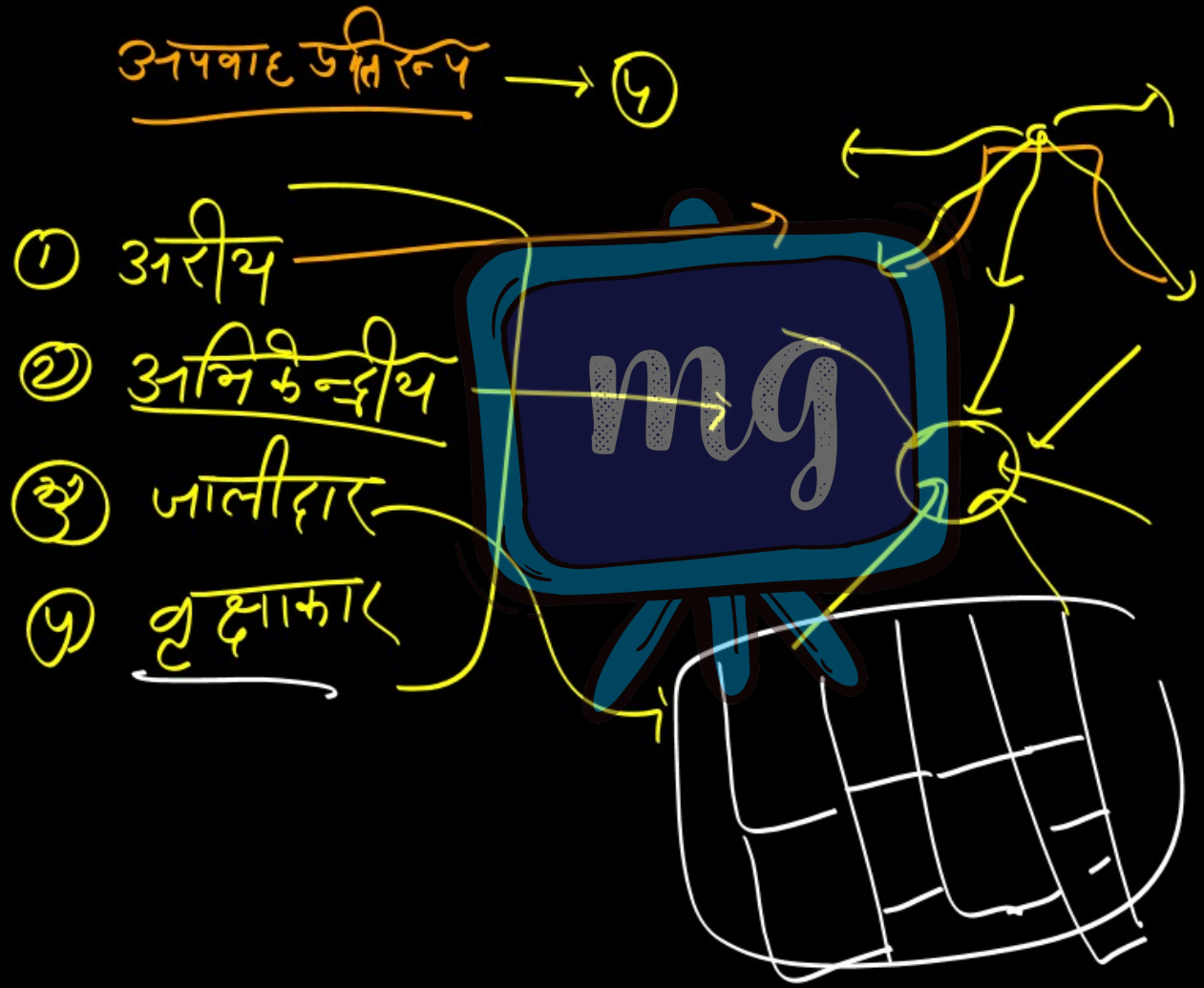

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

हिमालयी अपवाह तंत्र

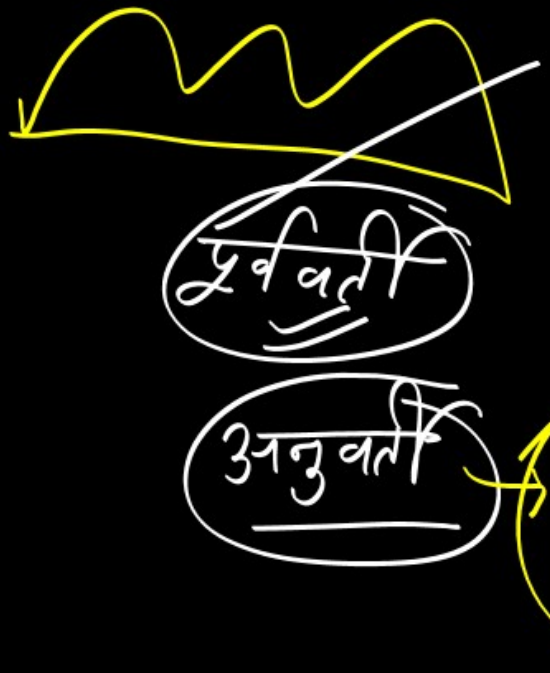

- हिमालयी अपवाह तंत्र भूगर्भिक इतिहास के एक लंबे दौर में विकसित हुआ।
- मुख्यतः गंगा, सिंधु व ब्रह्मपुत्र नदी द्रोणियाँ नदियाँ बारहमासी हैं, क्योंकि ये बर्फ पिघलने व वर्षण दोनों पर निर्भर गहरे महाखड्डों (Gorges) से गुजरती हैं।



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

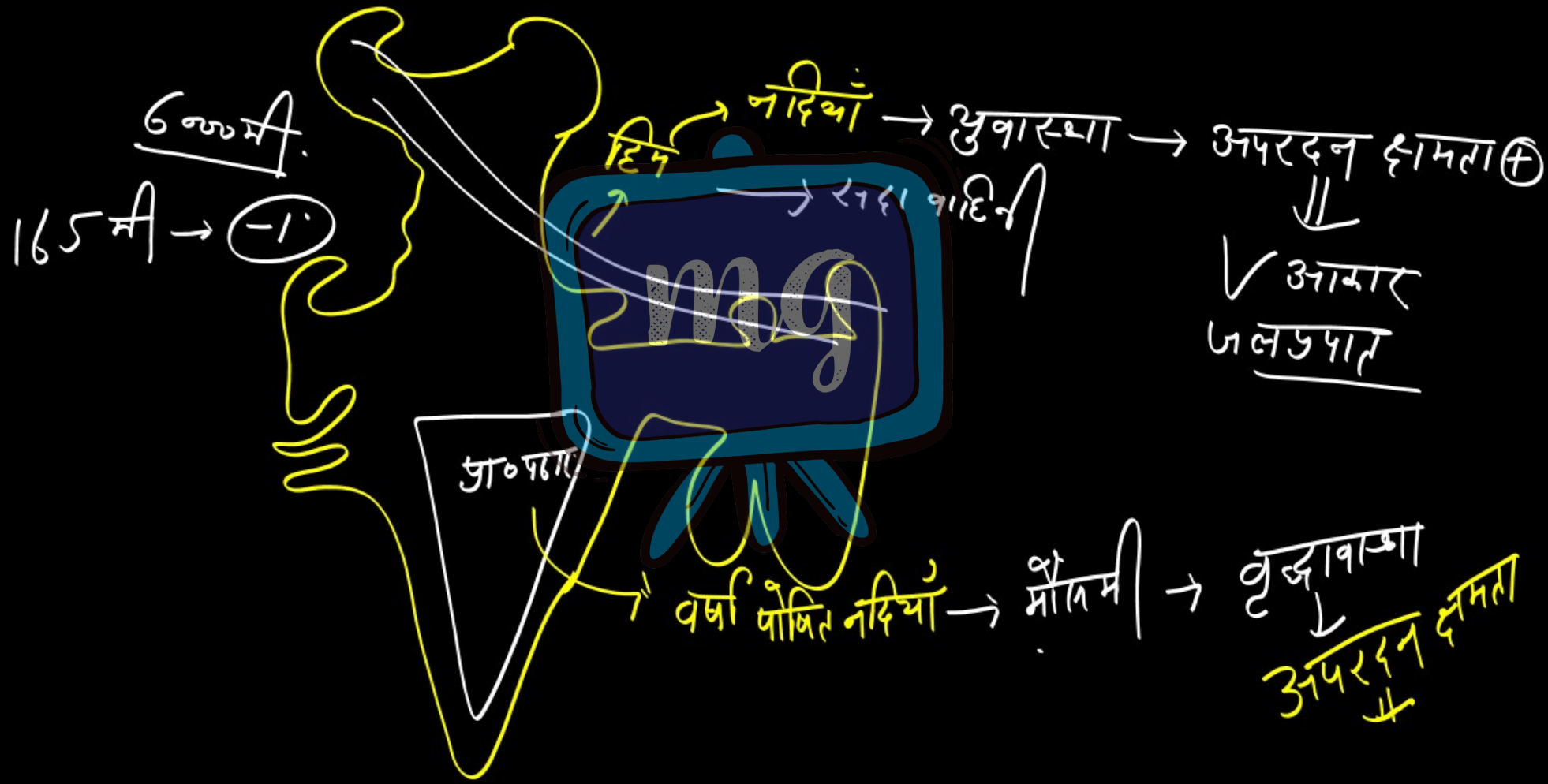

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

① अपरदन ② निक्षेप
घटाव जमाव

अपरदनात्मक स्थलाकृतियाँ

- महाखड्ड ,V-आकार की घाटियाँ, क्षिप्रिकाएँ व जलप्रपात

निक्षेपणात्मक स्थलाकृतियाँ

- समतल घाटियाँ, गोखुर झीलें, बाढ़कृत मैदान, गुंफित वाहिकाएँ, डेल्टा

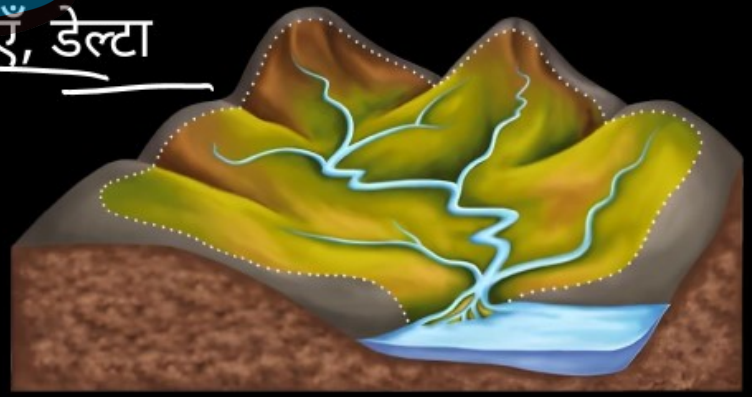

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



नोट

- हिमालय क्षेत्र में इन नदियों का रास्ता टेढ़ा-मेढ़ा है। परंतु मैदानी क्षेत्र में इनमें सर्पाकार मार्ग में बहने की प्रवृत्ति पाई जाती है और अपना रास्ता बदलती रहती हैं।
- **कोसी नदी**- बिहार का शोक (Sorrow of Bihar) अपना मार्ग बदलने के लिए कुख्यात

Under CSR Support by
ipca | Foundation

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

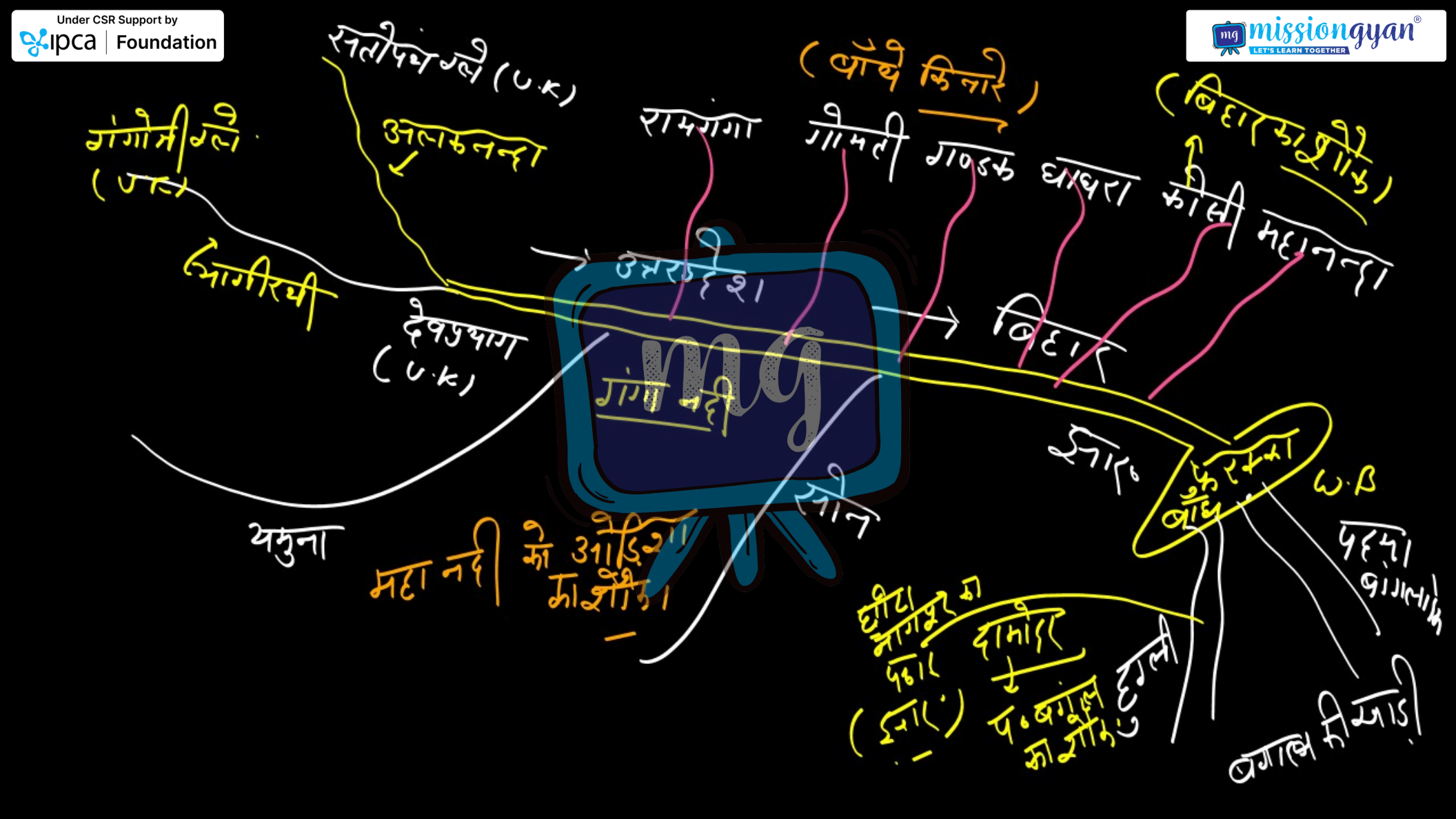

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

हिमालय पर्वतीय अपवाह तंत्र का विकास

- शिवालिक या इंडो-ब्रह्म नदी
  - मायोसीन कल्प में (लगभग 2.4 करोड़ से 50 लाख वर्ष पहले
  - हिमालय के संपूर्ण अनुदैर्ध्य विस्तार के साथ असम से पंजाब तक
  - अंत में निचले पंजाब के पास सिंध की खाड़ी में अपना पानी विसर्जित करती



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

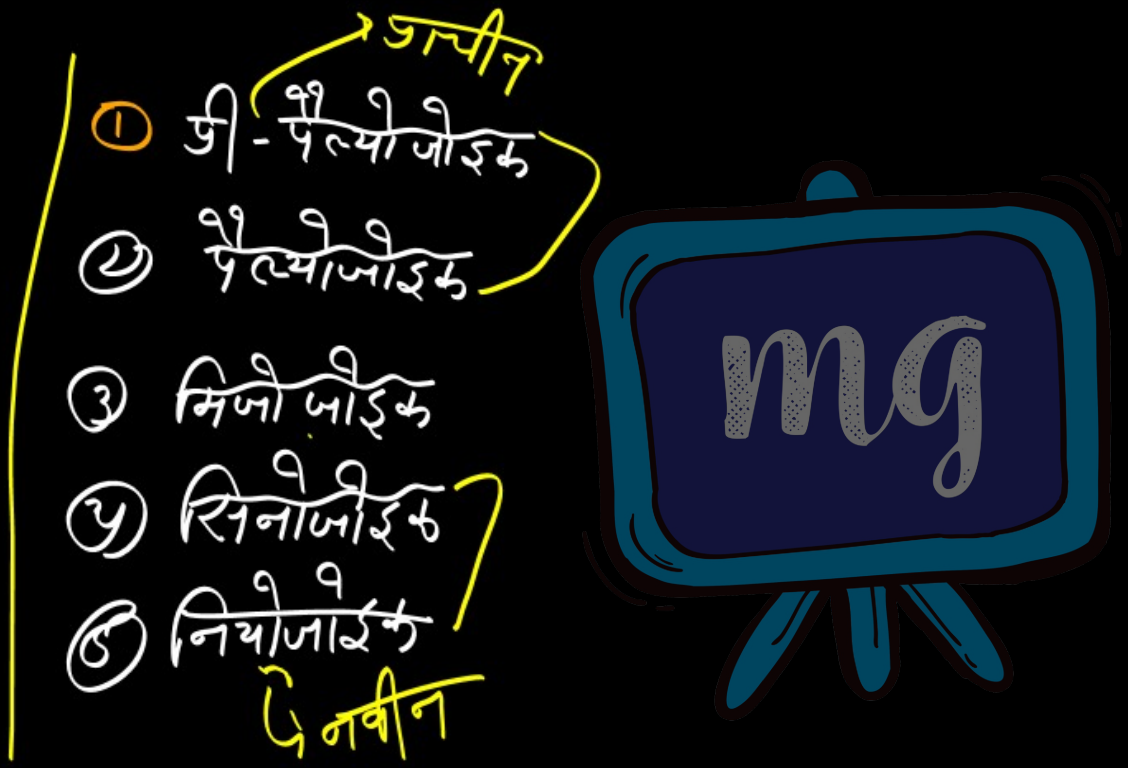

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

धारणा की पुष्टि



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कालांतर में इंडो-ब्रह्म नदी तीन मुख्य अपवाह तंत्रों में बँट गई

1. पश्चिम में सिंध और इसकी पाँच सहायक नदियाँ
2. मध्य में गंगा और हिमालय से निकलने वाली इसकी सहायक नदियाँ
3. पूर्व में बह्मपुत्र का भाग व हिमालय से निकलने वाली इसकी सहायक नदियाँ।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

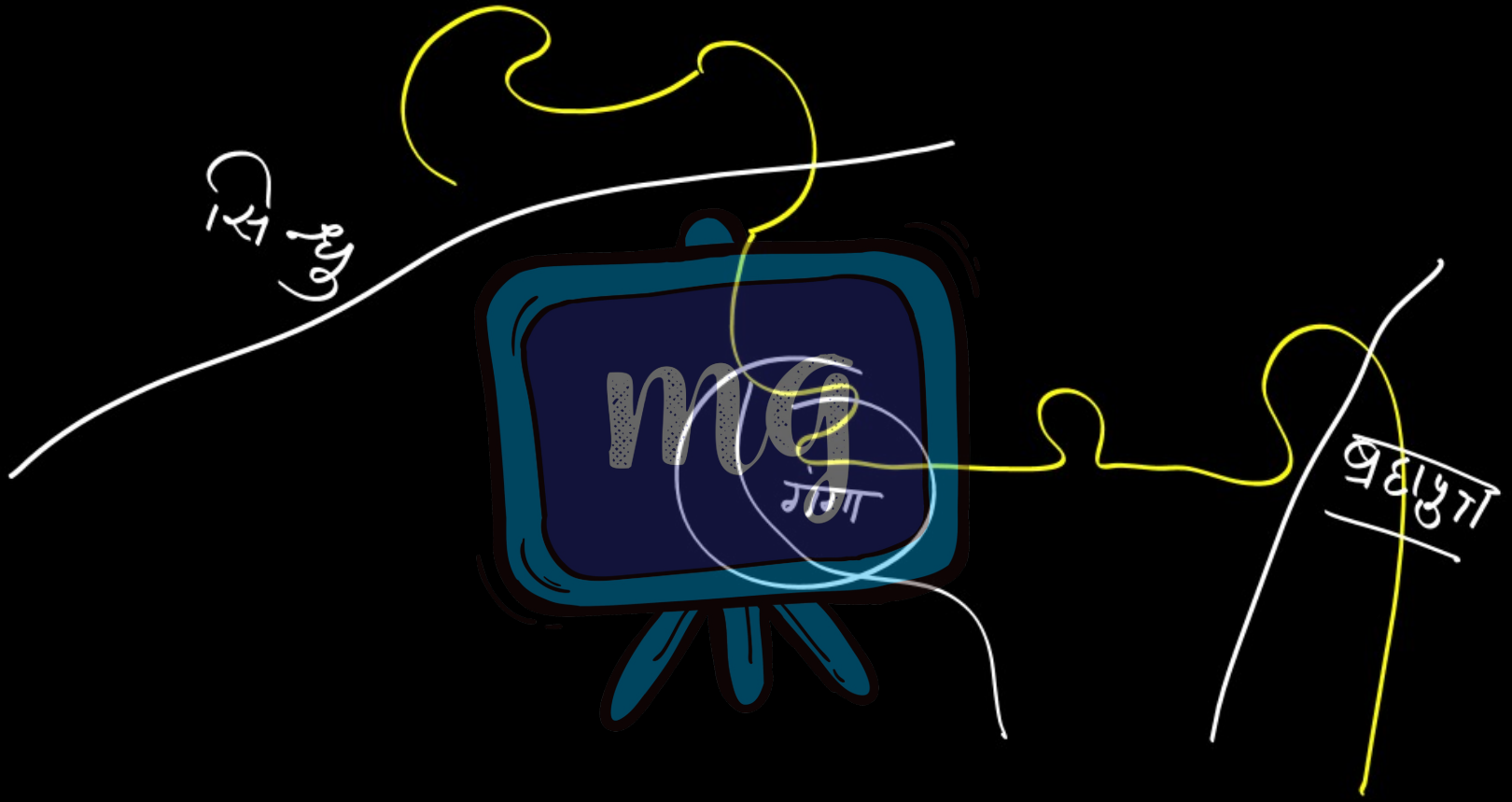

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

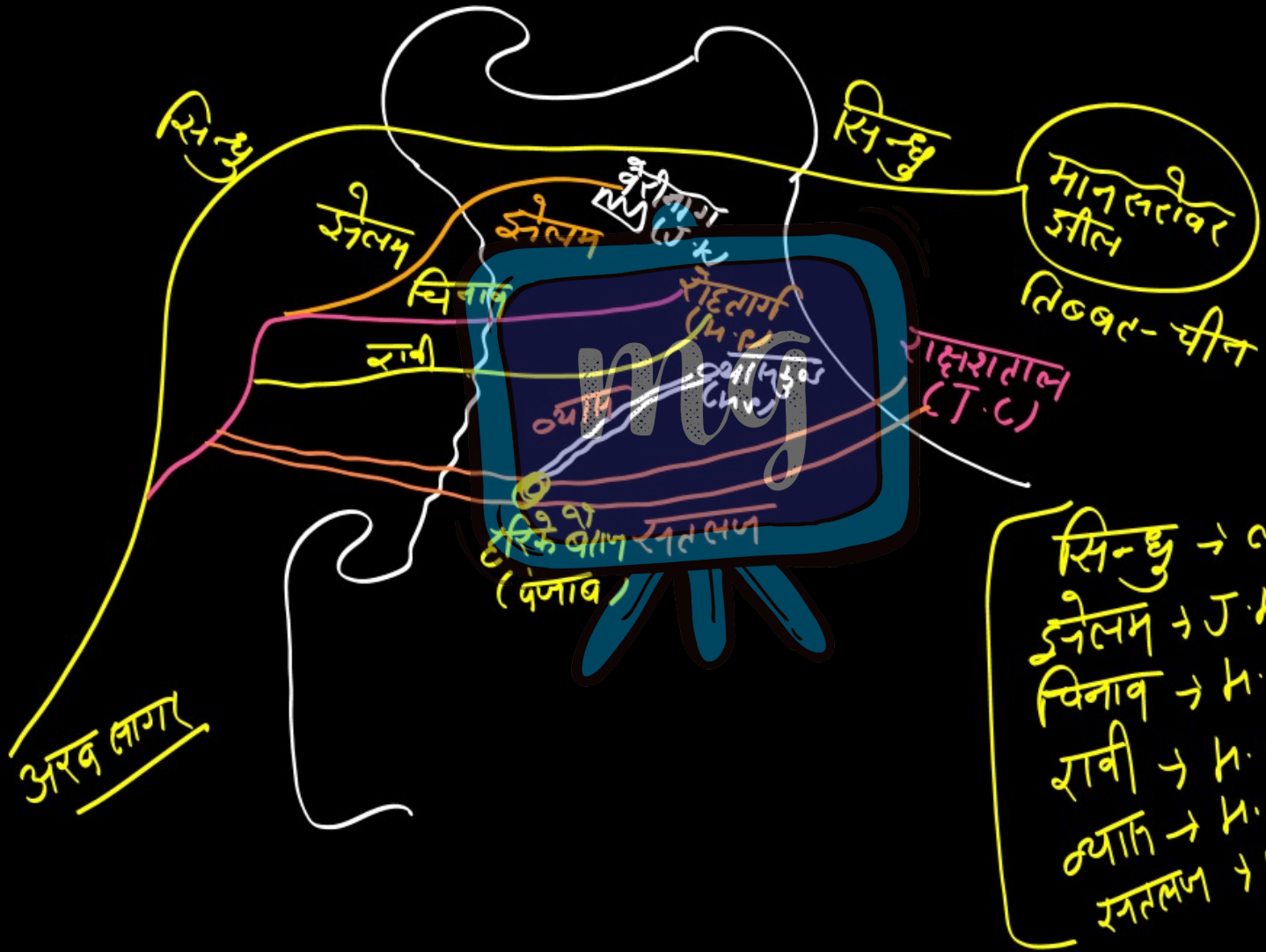

सिन्धु → लद्दाख
झेलम → J·k
चिनाब → H·P + J·k
रावी → H·P + पंजाब
ब्यास → H·P + पंजाब
सतलज → H·P + पंजाब

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

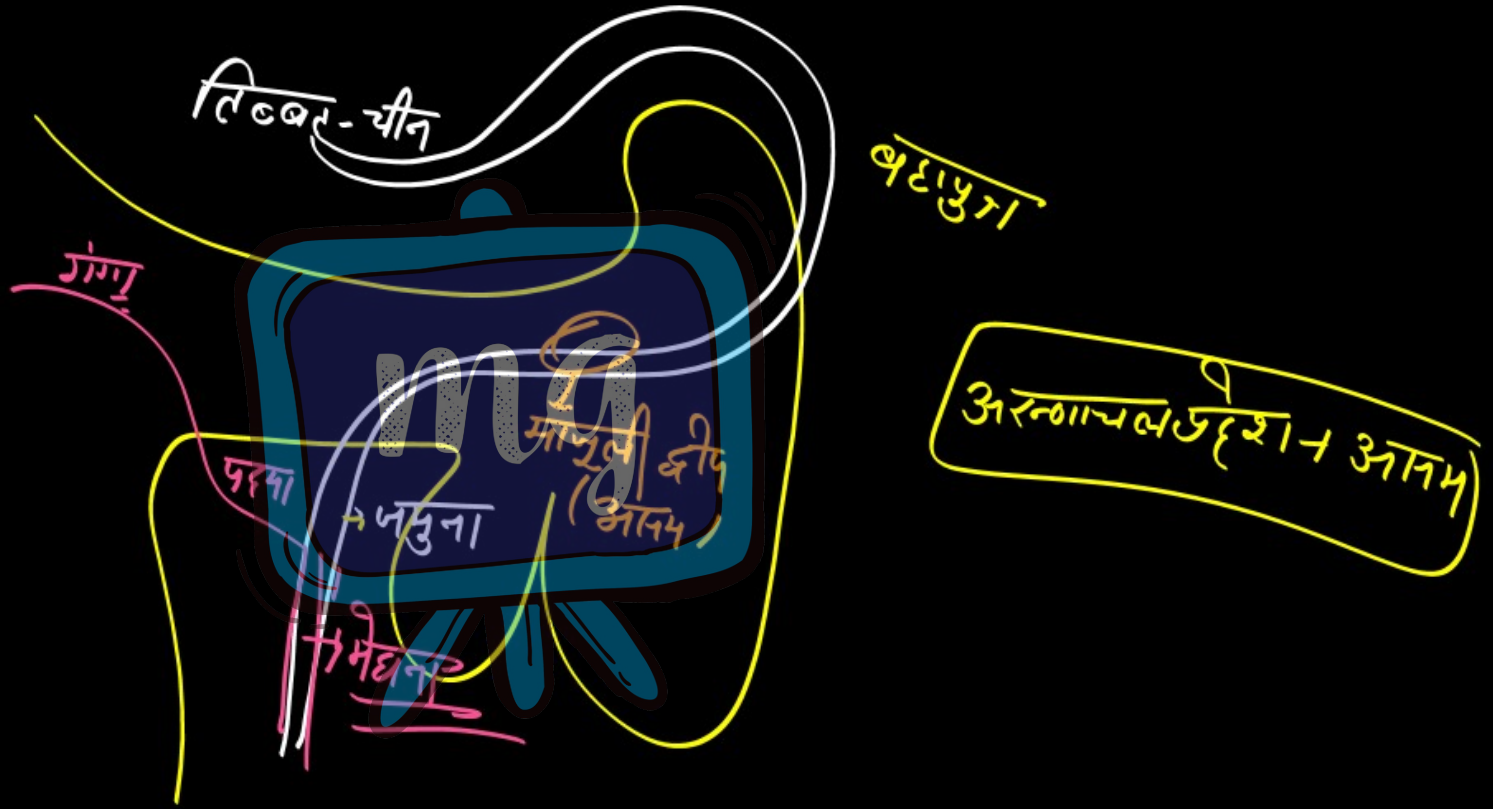

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

विशाल नदी का विभाजन



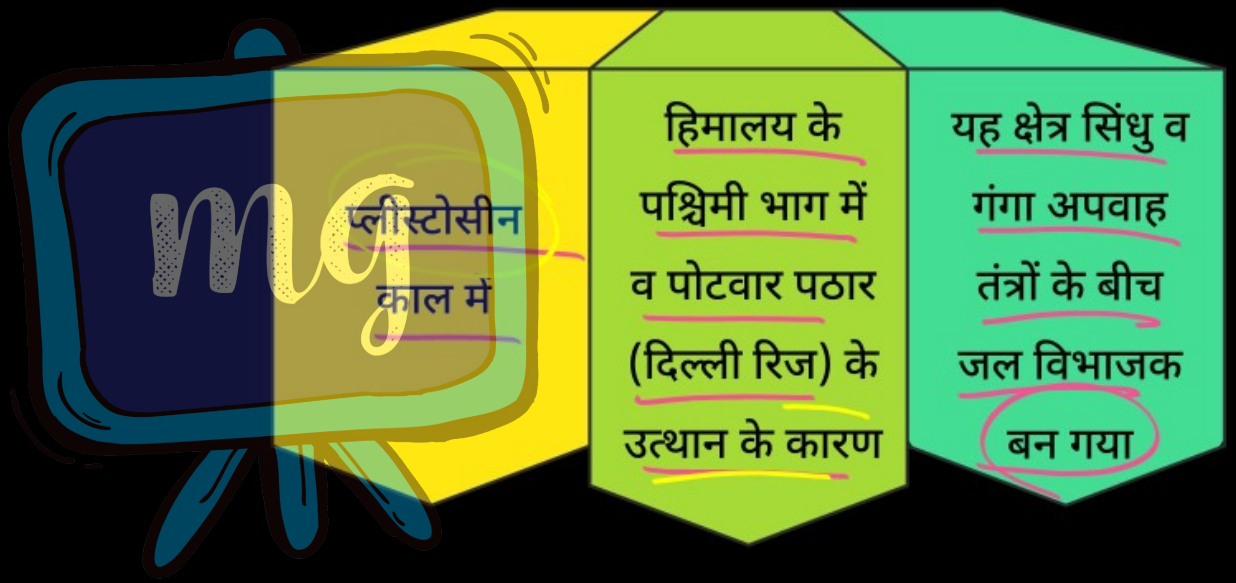

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

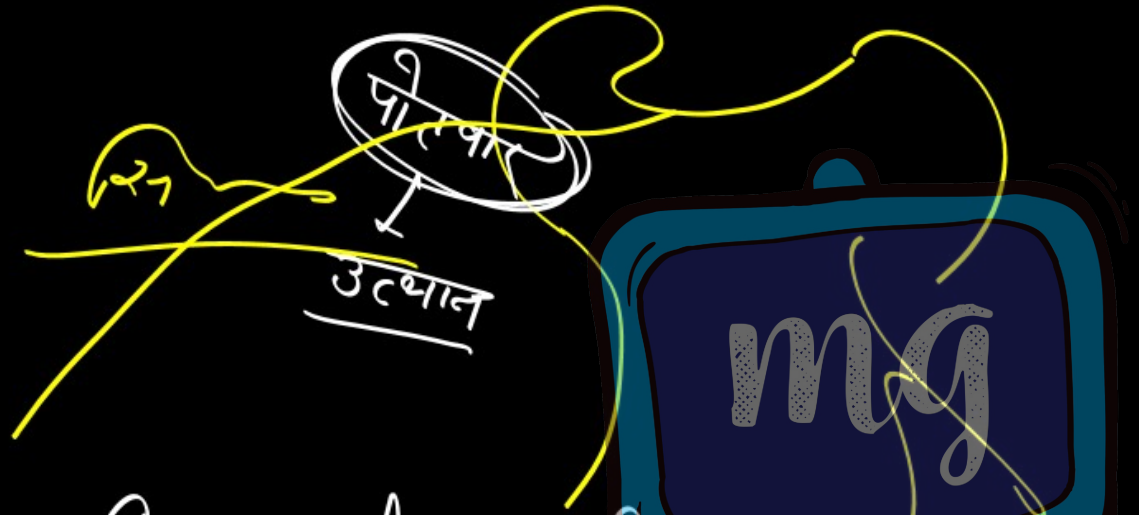

हिमालय नवीनतम वलित श्रृंखला → उत्थान अभी जारी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

